राजस्थान तकनीकी विश्वविद्यालय कोटा

कुलगीत

–टेक–
मंजिल को जब बढ़ें कदम, देखें, जानें परखें हम।
जीवन का इक मूल मंत्र है, ज्ञानं सम्यगवेक्षणम्।।
इसी मंत्र की दिव्य ध्वनि से, गुंफित होगा सुख अक्षय।
जय–जय–जय /राजस्थान.....तकनीकी विश्वविद्यालय।।

–गीत–
ज्ञान के जहान के अनंत आसमान में,
हौंसलों के पंख से जो हो उसी उड़ान में।
सकल समाज के सुखों के जो सपन सँजोए हैं,
सूत्र उनके लिक्खे तकनीक में, विज्ञान में।
तकनीक से सृष्टि का संतुलन सटीक है,
प्रगल्भ प्रेरणाओं की गवेषणा प्रतीक है।
विकास के विभाव की विजय प्रभावना लिये,
नवल प्रभात में हो नवल सूर्य का उदय.....
जय–जय–जय /राजस्थान.....तकनीकी विश्वविद्यालय।।

पत्थरों के प्राण से अग्निकण निचोड़कर,
चक्र की कल्पना का अंश अंश जोड़कर।
अणु–अणु में खोजकर शक्ति के निनाद को,
चीर दिया शून्य को भी ज्ञान से झिंझोड़कर।
कारखाने, बिजलीघर, बाँध, पुल, ईमारतें,
सबके भवितव्य को संवारती ईबारतें।
सभ्यता के पाँव में उमंग के बँधे नुपुर,
बाँच रहे हैं सब तकनीक की ही लय.....
जय–जय–जय /राजस्थान.....तकनीकी विश्वविद्यालय।।

तकनीकी आज साथ है–बोध को प्रसार दें,
सबकी कामनाओं के रंग को निखार दें।
शोध से उमंग के प्रसंग को तरंग दें,
जिससे नव–विकास हो सके वो नवाचार दें।
चलें असद् से सद की ओर, तम से ज्योत तक चलें,
मर्त्य से अमर्त्य चेतना के स्त्रोत तक चलें।
बढ़े चलें, बढ़े चलें, रुके नहीं, थके नहीं,
हम प्रलय के भाल पर लिखें विवेक की विजय.....
जय–जय–जय /राजस्थान.....तकनीकी विश्वविद्यालय।।

रचनाकार– श्री अतुल कनक
संगीत एवं स्वर– श्री बृजेश दाधीच एवं
डॉ. सविता खंडेलिया